जो विधि कर्म में लिखे विधाता

जो विधि कर्म में लिखे विधाता, मिटाने वाला कोई नहीं,
"वक्त पड़े पर गज़ भर कपड़ा, देने वाला कोई नहीं" ॥

वक्त पड़ा राजा हरीशचंद्र पे, काशी जो बिके भाई*,
रोहित दास को डसियो सर्प ने, रोती थी उसकी माई ॥
उसी समय रोहित को देखो ॥, बचाने वाला कोई नहीं,
वक्त पड़े पर गज़ भर कपड़ा, "देने वाला कोई नहीं" ।
जो विधि कर्म लिखे विधाता,,,,,,,,,,,,,,,,,,

वक्त पड़ा देखो रामचंद्र पे, वन को गए दोनों भाई*,
राम गए और लखन गए थे, साथ गई सीता माई ॥
वन में हरण हुआ सीता का ॥, बचाने वाला कोई नहीं,
वक्त पड़े पर गज़ भर कपड़ा, "देने वाला कोई नहीं" ।
जो विधि कर्म में लिखे विधाता,,,,,,,,,,,,,,,,,,

वक्त पड़ा अंधी अंधों पे, वन में सरवण मरन हुआ*,
सुन करके सुत का मरना फिर, उन दोनों का मरन हुआ ॥
उसी श्राप से दशरथ मर गए ॥, जलाने वाला कोई नहीं,
वक्त पड़े पर गज़ भर कपड़ा, "देने वाला कोई नहीं" ।
जो विधि कर्म में लिखे विधाता,,,,,,,,,,,,,,,,,,
अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/18735/title/jo-vidhi-karam-me-likhne-vidhata-jo

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |